बैंक ने हाल ही में थोक बैंकिंग पहल का शुभारंभ किया है। इस पहल का उद्देश्य, स्टेट बैंक समूह के आपसी तालमेल का लाभ उठाकर बैंक के कारपोरेट ग्राहकों को उनकी समस्त बैंकिंग आवश्यकताओं के लिए "वन स्टाप शाप" सुविधा उपलब्ध कराना है। इस पहल का प्रयोजन, कारपोरेट ग्राहकों को सुसंगठित, ग्राहक अनुरूप, विशेषज्ञ बैंकिंग सेवा उपलब्ध कराना है ताकि ऐसे ग्राहकों के साथ बैंक-व्यवसाय का बाजार अंश बढ़ाया जा सके।

तालिका 2 - थोक बैंकिंग समूह - उल्लेखनीय तथ्य

(राशि करोड़ रुपए में)

विवरण	31.03.2007 को	31.03.2008 को	संवृद्धि %
जमा	6669	9823	47
अग्रिम	37989	46042	21

ख.2 कारपोरेट लेखा समूह - (सीएजी)

दिनांक 31.03.2008 को कारपोरेट लेखा समूह के ऋण संविभाग में बैंक के वाणिज्यिक और संस्थागत गैर खाद्य ऋण का लगभग 23% और कुल देशी ऋण का 12% शामिल था।

उठाए गए कदम:

- वर्ष के दौरान शुल्क आधारित सेवाओं पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने के कारण शुल्क आधारित आय में 62% की वृद्धि हुई।
- फोरेक्स व्यवसाय के क्षेत्र में कारपोरेट लेखा समूह की विकास यात्रा जारी रही जिसके कारण 79% की संवृद्धि दर्ज की गई और बैंक के कुल देशी फोरेक्स टर्नओवर में सीएजी का योगदान 49% रहा।
- बैंक का नकदी प्रबंधन उत्पाद (सीएमपी) "एसबीआइ फास्ट" - वसूली और भुगतान सेवाओं के साथ-साथ विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पादों के माध्यम से कारपोरेट ग्राहकों का चलनिधि प्रबंधन करता है। इन उत्पादों में निम्न शामिल है : आटो स्वीप सुविधा, ग्राहक अनुरूप एमआइएस और समाधान, इसने समाधान सहयोग के साथ स्वचालित बल्क एनइएफटी, ईसीएस, आरटीजीएस भुगतान, सरकारी आयकर वापसी आदेशों (आइटीआरओ) का केंद्रीकृत थोक प्रसंस्करण शुरू किया और इस उद्देश्य के लिए काल-सेंटर की स्थापना की गई। स्ट्रेट थ्रू प्रोसेसिंग के माध्यम से सीएमपी - ई - भुगतान और ई-वसूली जैसे ग्राहकोनुकूल नए क्षेत्रों में भी प्रवेश करने वाला है।

ख.3 परियोजना वित्त और लीजिंग एसबीयू

परियोजना वित्त एसबीयू आधारभूत क्षेत्रों, जैसे ऊर्जा, दूरसंचार, सड़कों, बंदरगाहों (पोर्ट), हवाई अड्डों, विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) और अन्य मूल परियोजनाओं के वित्तपोषण पर ध्यान केंद्रित करता है। यह ऐसी गैर-संरचनात्मक परियोजनाओं को भी हाथ में लेता है, जिनकी परियोजना लागतों की निर्दिष्ट न्यूनतम सीमाएँ निर्धारित हैं। वर्ष के दौरान परियोजना ऋणों के समूहन और हामीदारी पर ध्यान केंद्रित किया गया। वर्ष 2007-08 के दौरान, परियोजना वित्त एसबीयू ने रु.92,558 करोड़ ऋण राशि की परियोजनाओं को हाथ में लिया और रु.20,195 करोड़ की संस्वीकृत प्राप्त की और अन्य बैंकों के साथ रु 54,951 करोड़ का ऋण समूहन किया।

अनुकूल वातावरण न होने और सस्ती लागत पर वित्तपोषण के अन्य विकल्पों की उपलब्धता को देखते हुए बैंक ने चालू वर्ष के दौरान भी लीज करार न करने का निर्णय किया। मार्च 2008 के अंत में "संवितरण" और पूँजीकरण "शून्य" तथा लाभ रु.8.81 करोड़ रहा।

ख 4. तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह (एसएएमजी)

वर्ष 2007-08 के दौरान तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह का निष्पादन नीचे तालिका में दिया हुआ है :

तालिका - 3 एसएएमजी - उल्लेखनीय तथ्य

(राशि करोड़ रुपए में)

1.	अनर्जक आस्तियों में नकदी वसूली	337
2.	मानक आस्तियों में कोटि उन्नयन	53
3.	बट्टे खाते में डालना	368
4.	अनर्जक आस्तियों में कुल कमी (1+2+3)	758
5.	बट्टे खाते डाले गए खातों में से वसूली	336

अलाभकारी आस्तियों के समाधान के लिए सतत प्रयास सुनिश्चित करने हेतु रु. 5 करोड़ और उससे अधिक बकाया वाली सभी अनर्जक आस्तियों के अधिग्रहण के लिए आरंभ में तनावग्रस्त आस्ति प्रबंधन समूह (एसएएमजी) का गठन किया गया। अब इसकी परिधि में रु.1.00 करोड़ और उससे अधिक राशि के ऋणों को शामिल कर दिया गया है

एसएमई और वैयक्तिक खंडों में रु.1.00 करोड़ और उससे अधिक राशि की अनर्जक आस्तियों के निपटान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पूरे देश में 92 तनावग्रस्त आस्ति समाधान केंद्रों की स्थापना की गई है। इनमें से बैंक के वसूली प्रयास को प्रोत्साहित करने हेतु 44 स्वतंत्र एसएआरसी को चरणबद्ध तरीके से एसएएमजी के अधीन लाया जा रहा है। इस वर्ष 9 एसएआरसी को एसएएमजी के नियंत्रण में पहले ही ला दिया गया है। एसएआरसी का निष्पादन उत्साहवर्धक रहा है और अनर्जक आस्तियों के प्रबंधन में हम ठोस प्रगति की आशा करते हैं।

ग. मध्य कारपोरेट समूह

ग-1 संबंध प्रबंधन और द्रुत ऋण प्रक्रिया के माध्यम से मध्य कारपोरेट समूह, मध्य कारपोरेट इकाइयों के व्यवसाय को आकर्षित करने में अत्यधिक सफल रहा है। इस खंड को अतिरिक्त महत्व देने के उद्देश्य से, वर्ष के दौरान, मध्य कारपोरेट समूह के मुखिया के रूप में उप प्रबंध निदेशक एवं समूह कार्यपालक (मिड कारपोरेट) की स्वतंत्र पदभार के रूप में नियुक्ति की गई।

The Bank has recently launched the "Wholesale Banking Initiative" to harness the SBI Group synergy for the benefit of the corporate customers by providing them with a 'One Stop Shop' facility for all their banking needs. The initiatives aim at providing comprehensive, customised and specialized banking solutions to the corporates thereby enhancing Bank's share of business with them.

Table : 2 WBG – Highlights

(Amount in Rs. crore)

Particulars	As on 31.03.2007	As on 31.03.2008	Growth %
Deposits	6669	9823	47
Advances	37989	46042	21

B.2 Corporate Accounts Group (CAG)

The loan portfolio of CAG constituted about 23% of the Bank's Commercial and Institutional non-food credit and 12% of the total domestic credit portfolio as on 31.03.2008.

Initiatives taken:-

- With focused initiatives on fee-based services, fee-based income registered an impressive 62% growth during the year.
- CAG continued on the growth trajectory in forex business registering a YOY growth of 79% and contributed 49% of the total domestic forex turnover of the Bank.
- SBI FAST, the Cash Management Product (CMP), in addition to offering collections and payments services, also facilitates the corporates' liquidity management by offering various value added products. These include auto sweep facility, customized MIS and reconciliation support, automated bulk NEFT, ECS and RTGS payments with reconciliation support etc. It has started processing of centralized payments in bulk (Income Tax Refund Orders) and has put in place a call centre for this purpose. CMP is well poised to enter new areas like customized e-payments and e-collections with Straight Through Processing.

B.3. Project Finance & Leasing SBU

The Project finance SBU focuses on funding core projects like power, telecom, roads, ports, airports, SEZ and others. It also handles non-infrastructure projects with certain ceilings on minimum project costs. During the year, the focus was on syndication and underwriting of project loans. Project Finance-SBU took up projects involving total debt of Rs. 92,558 crore and achieved sanctions of Rs. 20,195 crore, while it syndicated Rs. 54,951 crore with other banks during the year 07-08.

In view of the unfavourable climate and availability of alternative funding options at cheaper cost, the Bank decided not to write leases during the current year also. As at the end of March 2008, the disbursements and capitalization were "NIL" and profit amounted to Rs.8.81 crore.

B.4. Stressed Assets Management Group (SAMG)

The performance of SAMG during the year 2007-08 is given in Table No. 3 below.

Table : 3 SAMG – Highlights

(Amount in Rs. crore)

1	Cash Recovery in NPA	337
2	Upgradation to Standard Assets	53
3	Write Off	368
4	Gross reduction in NPAs (1+2+3)	758
5	Recovery in written off accounts	336

Stressed Assets Management Group (SAMG) was initially set up to take over all NPAs with outstanding of Rs. 5 crore and above for focused efforts in resolution of NPAs. The coverage has now been extended to Rs.1.00 crore and above across the country.

92 Stressed Assets Resolution Centres (SARCs) have been opened across the country for more focused resolution of NPAs with outstandings upto Rs.1 crore in SME and Personal segments. Out of these, 44 independent SARCs are being brought under SAMG in a phased manner to give further fillip to the Bank's recovery efforts. In this direction, 9 SARCs have already been brought under the control of SAMG during the year. The performance of SARCs is encouraging and we expect to make substantial progress in the Management of NPAs.

C. MID-CORPORATE GROUP

C.1. The Mid-Corporate Group (MCG) has been immensely successful in attracting the business of Mid-Corporate units through relationship management and quicker credit processing. To give added focus to this segment during the year, a Dy. Managing Director & Group Executive (Mid-Corporates) was posted to independently head the operations of the Mid-Corporate Group.

तालिका :4 मध्य कारपोरेट समूह : उल्लेखनीय तथ्य

(राशि करोड़ रुपए में)

विवरण	31.03.2007 को	31.03.2008 को	संवृद्धि %
अग्रिम (खाद्यान्न सहित)	68,446	76,338	11.5
अग्रिम (खाद्यान्न रहित)	60,138	73,874	23
आफसाइट अग्रिम	27,445	35,128	28
कुल अग्रिम (खाद्यान्न रहित)	87,583	1,09,002	24
जमा	10,011	11,648	16

- यह समूह बैंक के कुल गैर-खाद्यान्न अग्रिमों का 30% संभालता है तथा देश के विभिन्न भागों में स्थित अपने 8 क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से कार्य परिचालन करता है। अनुमान है कि देश के 38% मध्य कारपोरेट वर्ग को बैंक सेवा प्रदान कर रहा है। चालू वित्त वर्ष के दौरान समूह की सेवा परिधि के और विस्तृत होने की संभावना है।
- वर्ष के दौरान एमसीजी में 695 नए मध्य कारपोरेट ग्राहक जोड़े गए।
- 31 मार्च 2008 की स्थिति के अनुसार इस समूह का कुल ऋण संविभाग (निधि आधारित) रु.1,09,002 करोड़ था, जो देश के कई प्रमुख बैंकों द्वारा किए गए कुल व्यवसाय से अधिक है।
- अग्रिमों पर औसत प्रतिफल, मार्च 2007 के 8.76% के स्तर से बढ़कर मार्च 2008 में 9.73% हो गया।

किए गए प्रयास

- दो क्षेत्रीय कार्यालयों, मुंबई और चेन्नई में समूहन डेस्क स्थापित किए गए हैं, ताकि कार्यशील पूंजी ऋण सुविधाओं के समूहन के लिए उपलब्ध अवसरों का दोहन किया जा सके।
- चेन्नई और नई दिल्ली क्षेत्रों में परियोजना वित्तपोषण कक्षों की स्थापना की गई।
- आइपीओ/प्राइवेट ईक्विटी/ऋण समूहन/विदेशी मुद्रा ऋणों/विदेशी अभिग्रहणों/बाह्य वाणिज्यिक उधारों के रूप में मध्य कारपोरेट समूह ग्राहकों के लिए एसबीआइ कैप्स/विदेशी कार्यालयों के माध्यम से बड़ा व्यवसाय जुटाया गया।

नए उत्पाद

- निर्माण कंपनियों की ऋण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्माण उपकरण ऋण नाम से एक नया उत्पाद प्रारंभ किया गया।

ग.2 स्वर्ण बैंकिंग

बहुमूल्य धातु विभाग नाम से एक अलग विभाग बैंक के कारपोरेट केंद्र में सृजित किया गया है जिससे कि स्वर्ण बैंकिंग व्यवसाय को बढ़ावा दिया जा सके।

बैंक द्वारा स्वर्ण सिक्कों की खुदरा बिक्री प्रारंभ गई है जो इस समय देश भर में 250 शाखाओं में उपलब्ध है। यह योजना वर्तमान वर्ष के दौरान चरणबद्ध रूप से 1000 शाखाओं में उपलब्ध कराई जाएगी।

धातु ऋणों और रत्नाभूषण निर्माताओं को स्वर्ण की थोक बिक्री के लिए 52 शाखाओं को अधिकृत किया गया है। इन शाखाओं की संख्या को बढ़ाकर 70 किया जा रहा है।

मंदिरों, ट्रस्टों जैसी संस्थाओं के लिए स्वर्ण जमा योजना फिर से शुरू की गई है।

घ. राष्ट्रीय बैंकिंग समूह

बैंक के राष्ट्रीय बैंकिंग समूह (एनबीजी) में 3 व्यवसाय समूह यथा वैयक्तिक बैंकिंग, लघु और मध्यम उद्यम (एसएमई) और सरकारी बैंकिंग शामिल हैं।

वर्ष के दौरान बैंक ने मील पत्थर हासिल कर तमिलनाडु के शिवगंगा जिले में पुदुवयाल में अपनी 10,000 वीं शाखा खोली जिसका उद्घाटन माननीय वित्त मंत्री श्री पी. चिदंबरम ने किया।

वर्ष के दौरान 965 शाखाएँ खोली गईं और मार्च 2008 के अंत तक बैंक के पास 10,186 शाखाओं का विशाल नेटवर्क है जो ग्राहकों को देश के कोने कोने में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

तालिका - 5 राष्ट्रीय बैंकिंग समूह - उल्लेखनीय तथ्य

(राशि करोड़ रुपए में)

विवरण	31.03.2007 को	31.03.2008 को	संवृद्धि %
जमाराशियाँ (अंतर बैंक को छोड़कर)	3,67,524	4,54,883	23.77
अग्रिम (खाद्य सहित किंतु अंतर बैंक को छोड़कर)	1,98,701	2,44,617	23.11
अग्रिम (खाद्य को छोड़कर)	1,95,531	2,43,068	24.31

घ.1 वैयक्तिक बैंकिंग व्यवसाय इकाई

वर्ष के दौरान वैयक्तिक बैंकिंग देशीय जमाराशियाँ रु.1,90,870 करोड़ से बढ़कर रु.2,36,645 करोड़ तक पहुंच गईं। इस प्रकार रु.45,775 करोड़ (23.98%) की वृद्धि परिलक्षित हुई जबकि पिछले वर्ष यह वृद्धि रु. 27,684 करोड़ थी।

Table : 4 MCG – Highlights

(Amount in Rs. crore)

Particulars	As on 31.03.2007	As on 31.03.2008	growth %
Advances (incl. food)	68,446	76,338	11.5
Advances (excl. food)	60,138	73,874	23
Offsite advances	27,445	35,128	28
Total advances (excl. food)	87,583	1,09,002	24
Deposits	10,011	11,648	16

- The Group handles about 30% of the total non-food advances of the Bank and operates through 8 Regional Offices situated across the country. It is estimated that 38% of the Mid-Corporate universe in the country is covered by the Bank. The coverage is expected to be extended to more centres during the current year.
- 695 new mid corporate clients were added to the MCG during the year.
- The total credit portfolio (fund based) of the Group stood at Rs 1,09,002 crore as on 31st March, 2008. This is more than the aggregate business handled by many of the top banks in the country.
- The average yield on advances went up from 8.76% in March 2007 to 9.73% in March 2008.

Initiatives Taken

- Syndication Desks have been created at two Regional Offices, Mumbai and Chennai, to tap the opportunities available for syndicating working capital facilities.
- Project Finance Cells have been set up in Chennai and New Delhi Regions.
- Substantial business in the form of IPOs/ Private Equity/Debt Syndication/Foreign Currency Loans/Overseas Acquisitions/External Commercial Borrowings has been arranged for MCG clients through SBICAPS/Foreign Offices.

New Products

- A new product, Construction Equipment Loan, to cater to Construction Companies has been launched.

C.2 Gold Banking

A separate Department, Precious Metals Department, has been created at the Bank's Corporate Centre for the purpose of boosting the Gold Banking business.

The Bank launched retail sale of gold coins which is now available at 250 branches across the country. The scheme would be extended to cover 1000 branches in a phased manner during the current year.

While 52 branches are authorized for metal loans and bulk sale of gold to jewellery manufacturers the number is being increased to 70.

Gold Deposit Scheme has been revived for institutions like temples, trusts, etc.

D. NATIONAL BANKING GROUP

The Bank's National Banking Group (NBG) consists of three Business Groups viz., Personal Banking, Small & Medium Enterprise (SME), and Government Banking.

During the year Bank achieved a milestone by opening its 10,000th Branch at Puduvayal, Sivaganga District in Tamil Nadu, which was inaugurated by Hon. Finance Minister Shri P. Chidambaram.

During the year, as many as 965 branches were opened, and at the end of March 2008 the Bank has a vast network of 10,186 branches to reach out to customers, even in the remotest parts of the country.

Table : 5 NBG – Highlights

(Amount in Rs. crore)

Particulars	As on 31.03.2007	As on 31.03.2008	% growth
Deposits (excluding inter bank)	3,67,524	4,54,883	23.77
Advances (including food but excluding inter bank)	1,98,701	2,44,617	23.11
Advances (excluding food)	1,95,531	2,43,068	24.31

D.1 Personal Banking Business Unit

During the year, Personal Banking domestic deposits have grown from Rs.1,90,870 crore to Rs.2,36,645 crore, showing a growth of Rs.45775 crore (23.98 %) as against Rs.27,684 crore during the previous year.